Topic 77 भाव कर्म प्रक्रिया 2

चिण् भावकर्मणोः ।

च्लेश्चिण् स्याद्भावकर्मवाचिनि तशब्दे परे। अभावि। अभाविष्यत, अभाविष्यत। अकर्मकोऽप्युपसर्गवशात् सकर्मकः। अनुभूयते आनन्दश्चैत्रेण त्वया मया च। अनुभूयेते। अनुभूयन्ते। त्वमनुभूयसे। अहमनुभूये। अन्वभावि। अन्वभाविषाताम्, अन्वभाविषाताम्। णिलोपः- भाव्यते। भावयाञ्चक्रे। भावयाम्बभूवे। भावयामासे। चिण्वदिटा भाविता। आभीयत्वेनासिद्धत्वाण्णिलोपः। भावयिता। अभावयिषाताम्। अभाविषाताम्। बुभूष्यते। बुभूषिता। बुभूषिष्यते। बोभूयते। बोभूयते। अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः। स्तूयते विष्णुः। स्ताविता, स्तोता। स्ताविष्यते, स्तोष्यते। अस्तावि। अस्ताविषाताम्, अस्तोषाताम्। ऋ गतौ। गुणोऽर्तिo। अर्यते। स्मृ स्मरणे। स्मर्यते। सस्मरे। उपदेश ग्रहणाच्चिण्वदिट्। आरिता, अर्ता। स्मारिता, स्मर्ता। अनिदितामo इति नलोपः। स्रस्यते। इदितस्तु नन्द्यते। सम्प्रसारणम्। इज्यते।

तनोतेर्यकि।

आकारान्तादेशो वा स्यात्। तायते, तन्यते। यक् परे होने पर 'तन्' धातु के

धातु के स्थान पर विकल्प से आकार आदेश होता है। अलोऽन्त्यस्य। परिभाषा से यह आदेश 'तन्' के अन्त्य नकार के स्थान पर ही होता है। उदाहरण के लिए कर्मवाच्य में लट्लकार के प्रथम-पुरुष एकवचन में 'तनु' धातु से आत्मनेपद प्रत्यय 'त' और यक् होकर 'तन य त' रूप बनता है। इस स्थिति में 'यक' परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'तन्' के नकार के स्थान पर आकार होकर 'त आ य त' रूप बनता है। तब दीर्घ और एत्व होकर 'तायते' रूप सिद्ध होता है। आकार के अभाव-पक्ष में 'तन्यते' रूप बनता है।

तपोऽनुतापे च।

तपश्च्लेश्चिण् न स्यात् कर्मकर्तर्यनुतापे च। अन्वतप्त पापेन। घुमास्था। इतीत्वम्। दीयते। धीयते। ददे।

आतो युक् चिण्-कृतोः।

आदन्तानां युगागमः स्याच्चिणि ञ्णिति कृति च। दायिता, दाता। दायिषीष्ट, दासीष्ट। अदायि। अदायिषाताम्। भज्यते।

भञ्जेश्च चिणि।

नलोपो वा स्यात्। अभाजि, अभञ्जि। लम्भते।

विभाषा चिण्णमुलोः।

लभेर्नुमागमो वा स्यात्। अलम्भि, अलाभि।